NORTH POINT SR. SEC. BOARDING SCHOOL

Hindi class work and Home work

आत्म-परिचय, एक गीत

कवि परिचय
हरिवंश राय बच्चन

व्याख्या एवं अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

निम्नलिखित काव्यांशों को ध्यानपूर्वक पढ़कर सप्रसंग व्याख्या कीजिए और नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए

(क) आत्मपरिचय

1.

मैं जग– जीवन का मार लिए फिरता हूँ,
फिर भी जीवन में प्यार लिए फिरता हूँ;
कर दिया किसी ने प्रकृत जिनको छूकर
मैं साँसों के दो तार लिए फिरता हूँ!

मैं स्नेह-सुरा का पान किया करता हूँ,
में कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ,
जग पूछ रहा उनको, जो जग की गाते,
मैं अपने मन का गान किया करता हूँ!

प्रश्न

(क) जगजीवन का भार लिए फिरने से कवि का क्या आशय हैं? ऐसे में भी वह क्या कर लेता है?
(ख) 'स्नेह–सुरा' से कवि का क्या आशय हैं?
(ग) आशय स्पष्ट कीजिए जग पूछ रहा उनको, जो जग की गाते।
(घ) 'साँसों के तार' से कवि का क्या तात्पर्य हैं? आपके विचार से उन्हें किसने झकृत किया होगा?

2.

मैं निज उर के उद्गार लिए फिरता हूँ
मैं निज उर के उपहार लिए फिरता हूँ
है यह अपूर्ण संसार न मुझको भाता
मैं स्वप्नों का संसार लिए फिरता हूँ।

मैं जला हृदय में अग्नि, दहा करता हूँ
सुख-दुख दोनों में मग्न रहा करता हूँ,
जग भव-सागर तरने की नाव बनाए,
मैं भव-मौजों पर मस्त बहा करता हूँ।

प्रश्न

(क) कवि के हृदय में कौन–सी अग्नि जल रही हैं? वह व्यक्ति क्यों है?
(ख) 'निज उर के उद्गार व उपहार' से कवि का क्या तात्पर्य हैं? स्पष्ट कीजिए
(ग) कवि को संसार अच्छा क्यों नहीं लगता?
(घ) संसार में कष्टों को सहकर भी खुशी का माहौल कैसे बनाया जा सकता हैं?

3.

मैं यौवन का उन्माद लिए फिरता हूँ,
उन्मादों में अवसाद लिए फिरता हुँ,
जो मुझको बाहर हँसा, रुलाती भीतर,
मैं, हाय, किसी की याद लिए फिरता हुँ!

कर यत्न मिटे सब, सत्य किसी ने जाना?
नादान वहीं हैं, हाथ, जहाँ पर दाना!
फिर मूढ़ न क्या जग, जो इस पर भी सीखे?
मैं सीख रहा हुँ, सीखा ज्ञान भुलाना!

प्रश्न

(क) 'यौवन का उन्माद' का तात्यय बताइए।
(ख) कबि की मनःस्थिति कैसी है?
(ग) ' नादान ' कौन है तथा क्यो?
(घ) संसार के बारे में कवि क्या कह रहा हैं?
(डा) कवि सीखे ज्ञान की क्यों भूला रहा है?

4.

मैं और, और जग और, कहाँ का नाता,
मैं बना-बना कितने जग रोज मिटाता,
जग जिस पृथ्वी पर जोड़ा करता वैभव,
मैं प्रति पग से उस पृथ्वी को ठुकराता!

मैं निज रोदन में राग लिए फिरता हूँ,
शीतल वाणी में आग लिए फिरता हूँ,
हों जिस पर भूपों के प्रासाद निछावर,
मैं वह खंडहर का भाग लिए फिरता हूँ।

प्रश्न

(क) कवि और संसार के बीच क्या संबंध हैं?
(ख) कवि और संसार के बीच क्या विरोधी स्थिति हैं?
(ग) 'शीतल वाणी में' आग लिए फिरता हूँ' -से कवि का क्या तात्पर्य होने
(घ) कवि के पास ऐसा क्या हैं जिस पर बड़े–बड़े राजा न्योछावर हो जाते हैं?

5.

मैं रोया, इसको तुम कहाते हो गाना,
मैं फूट पडा, तुम कहते, छंद बनाना,
क्यों कवि कहकर संसार मुझे अपनाए,
मैं दुनिया का हूँ एक क्या दीवान"

मैं बीवानों का वेश लिए फिरता हूँ
मैं मादकता निद्राशष लिए फिरता ही
जिसकी सुनकर ज़य शम, झुके; लहराए,
मैं मरती का संदेश लिए फिरता हुँ

प्रश्न

(क) कवि की किस बात को ससार क्या समझता हैं?
(ख) कवि स्वयं को क्या कहना पसंद करता हैं और क्यों?
(ग) कवि की मनोदशा कैसी हैं?
(घ) कवि संसार को क्या संदेश देता हैं? संसार पर उसकी क्या प्रतिक्रिया होती है?

(ख) एक गीत

1.

दिन जल्दी- जल्दी ढलता है!
हो जाए न पथ में रात कहीं,
मंजिल भी तो है दूर नहीं-

यह सोच थका7 दिन का पथी भी जल्दी- जल्दी चलता हैं!
दिन जल्दी- जल्दी ढोलता हैं!

प्रश्न

(क) 'हो जाए न पथ में'- यहाँ किस पथ की ओर कवि ने सकेत किया हैं?
(ख) पथिक के मन में क्या आशका हैं?
(ग) पथिक के तेज चलने का क्या कारण हैं?
(घ) कवि दिन के बारे में क्या बताता हैं?

2.

बच्चे प्रत्याशा में होंगे,
नीड़ों से झाँक रहे होंगे-

यह ध्यान परों में चिड़ियों के भरता कितनी चंचलता है!
दिन जल्दी- जल्दी ढलता है!

प्रश्न

(क) बच्चे किसका इंतजार कर रहे होंगे तथा क्यों?
(ख) चिड़ियों के घोंसलों में किस दूश्य की कल्पना की गई हैं?
(ग) चिड़ियों के परों में चंचलता आने का क्या कारण हैं?
(घ) इस अशा से किस मानव–सत्य को दशाया गया है?

‘

3.

मुझसे मिलने को कौन विकल?
मैं होऊँ किसके हित चंचला?

यह प्रश्न शिथिल करता पद को, भरता उर में विहवलता हैं!
दिन जल्दी- जल्दी ढलता है!

प्रश्न

(क) कवि के मन में कौन–से प्रश्न उठते हैं?
(ख) कवि की व्याकुलता का क्या कारण हैं?
(ग) कवि के कदम शिथिल क्यों हो जाते हैं?
(घ) ‘मैं होऊँ किसके हित चचल?’ का भाव स्पष्ट कीजिए

काव्य-सौंदर्य बोध संबंधी प्रश्न

निम्नलिखित काव्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(क) आत्मपरिचय

1.

मैं जग- जीवन का भार लिए फिरता हूँ,
फीर भी जीवन मैं प्यार लिए फिरता हुँ,
कर दिया किसी ने झंकृत जिनको छूकर
मैं साँसों के दो तार लिए फिरता हूँ।

मैं स्नेह- सुरा का पान किया करता हूँ,
मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ,
जग पूछ रहा उनको, जो जग की गाते,
मैं अपने मन का गान किया करता हूँ।

प्रश्न

(क) 'फिर भी' और 'किसी ने' का प्रयोग–वैशिष्ट बताइए।
(ख) काव्याश का भाव–सौंदर्य स्पष्ट कीजिए ।
(ग) काव्यश की अलकार योजना बताइए।

2.

में जला हृदय में अग्नि, दहा करता हूँ,
सुख- दुख दोनों में मग्न रहा करता हूँ ,

जय भव- सागर तरने की नाव बनाए,
मैं भव- मौजों पर मस्त बहा करता हूँ।

प्रश्न

(क) काव्याशा का भाव–संदर्य स्पष्ट कीजिए ।
(ख) रस एव अलकार सबधी सौंद्वय बताइए।
(ग) प्रयुक्त भाषा–शिल्य पर टिप्पणी कीजिए/

3.

मैं और, और जग और, कहाँ का नाता,
में बना- बना कितने जग रोज मिटाता,

जग जिस पृथ्वी पर जोड़ा करता वैभव,
मैं प्रति पग से उस पृथ्वी को ठुकराता!

मैं निज रोदन में राग लिए फिरता हूँ,
शीतल वाणी में आग लिए फिरता हूँ,
हों जिस पर भूपों के प्रासाद निछावर,
मैं वह खंडहर का भाग लिए फिरता हूँ।

प्रश्न

(क) 'और जग और ' का भाव स्पष्ट कीजिए।
(ख) 'शीतल वाणी में आग लिए फिरता हुँ' का गाव–सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।
(ग) काव्यांश का शिल्प–सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।

(ख) एक गीत

1.

दिन जल्दी- जल्दी ढलता है!
हो जाए न पथ में रात कहीं,
मंजिल भी तो है दूर नहीं-
यह सोच थका दिन का पथ भी जल्दी- जल्दी चलता है!
दिन जल्दी- जल्दी ढलता है !
बच्चे प्रत्याशा में होंगे,
नीड़ों से झाँक रहे होंगे-
यह ध्यान परों में चिड़ियों के भरता कितनी चचलता है!
दिन जल्दी- जल्दी ढलता है!

प्रश्न

(क) काव्यांश की भाषागत दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
(ख) भाव–सौंदर्य स्पष्ट कीजिए :
बच्चे प्रत्याशा में होंगे,
नीड़ों से झाँक रहे होंगे।
(ग) 'पथ", 'मंजिल' और ' रात ' शब्द किसके प्रतीक हैं?

पाठ्यपुस्तक से हल प्रश्न

कविता के साथ

प्रश्न 1:
कविता एक ओर जग–जीवन का मार लिए घूमने की बात करती है और दूसरी ओर 'मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ'-विपरीत से लगते इन कथनों का क्या आशय हैं?

उत्तर –
जग–जीवन का भार लेने से कवि का अभिप्राय यह है कि वह सांसारिक दायित्वों का निर्वाह कर रहा है। आम व्यक्ति से वह अलग नहीं है तथा सुख–दुख, हानि–लाभ आदि को झेलते हुए अपनी यात्रा पूरी कर रहा है। दूसरी तरफ कवि कहता है कि वह कभी संसार की तरफ ध्यान नहीं देता। यहाँ कवि सांसारिक दायित्वों की अनदेखी की बात नहीं करता। वह संसार की निरर्थक बातों पर ध्यान न देकर केवल प्रेम पर केंद्रित रहता है। आम व्यक्ति सामाजिक बाधाओं से डरकर कुछ नहीं कर पाता। कवि सांसारिक बाधाओं की परवाह नहीं करता। अतः इन दोनों पंक्तियों के अपने निहितार्थ हैं। ये एक–दूसरे के विरोधी न होकर पूरक हैं।

प्रश्न 2:
जहाँ पर दाना रहते हैं, वहीं नादान भी होते हैं–कवि ने ऐसा क्यों कहा होगा?

उत्तर –
नादान यानी मूर्ख व्यक्ति सांसारिक मायाजाल में उलझ जाता है। मनुष्य इस मायाजाल को निरर्थक मानते हुए भी इसी के चक्कर में फैसा रहता है। संसार असत्य है। मनुष्य इसे सत्य मानने की नादानी कर बैठता है और मोक्ष के लक्ष्य को भूलकर संग्रहवृत्ति में पड़ जाता है। इसके विपरीत, कुछ ज्ञानी लोग भी समाज में रहते हैं जो मोक्ष के लक्ष्य को नहीं भूलते। अर्थात संसार में हर तरह के लोग रहते हैं।

प्रश्न 3:
मैं और, और जग और कहाँ का नाता– पंक्ति में 'और' शब्द की विशेषता बताइए।

उत्तर –
यहाँ 'और' शब्द का तीन बार प्रयोग हुआ है। अतः यहाँ यमक अलंकार है। पहले 'और' में कवि स्वयं को आम व्यक्ति से अलग बताता है। वह आम आदमी की तरह भौतिक चीजों के संग्रह के चक्कर में नहीं पड़ता। दूसरे 'और' के प्रयोग में संसार की विशिष्टता को बताया गया है। संसार में आम व्यक्ति सांसारिक सुख–सुविधाओं को अंतिम लक्ष्य मानता है। यह प्रवृत्ति कवि की विचारधारा से अलग है। तीसरे 'और' का प्रयोग 'संसार और कवि में किसी तरह का संबंध नहीं' दर्शाने के लिए किया गया है।

प्रश्न 4:
शीतल वाणी में आग' के होने का क्या अभिप्राय हैं?

अथवा

'शीतल वाणी में आग लिए फिरता हूँ'-इस कथन से कवि का क्या आशय है?

अथवा

'आत्मपरिचय' में कवि के कथन– 'शीतल वाणी में आग लिए फिरता हुँ' – का विरोधाभास स्पष्ट कीजिए।

उत्तर –
कवि ने यहाँ विरोधाभास अलंकार का प्रयोग किया है। कवि की वाणी यद्यपि शीतल है, परंतु उसके मन में विद्रोह, असंतोष का भाव प्रबल है। वह समाज की व्यवस्था से संतुष्ट नहीं है। वह प्रेम–रहित संसार को अस्वीकार करता है। अतः अपनी वाणी के माध्यम से अपनी असंतुष्टि को व्यक्त करता है। वह अपने कवित्व धर्म को ईमानदारी से निभाते हुए लोगों को जाग्रत कर रहा है।

प्रश्न 5:
बच्चे किस बात की आशा में नीड़ों से झाँक रहे होंगे?
उत्तर –
पक्षी दिन भर भोजन की तलाश में भटकते फिरते हैं। उनके बच्चे घोंसलों में माता–पिता की राह देखते रहते हैं कि मातापिता उनके लिए दाना लाएँगे और उनका पेट भरेंगे। साथ–साथ वे माँ–बाप के स्नेहिल स्पर्श पाने के लिए प्रतीक्षा करते हैं। छोटे बच्चों को माता–पिता का स्पर्श व उनकी गोद में बैठना, उनका प्रेम–प्रदर्शन भी असीम आनंद देता है। इन सबकी पूर्ति के लिए वे नीड़ों से झाँकते हैं।

प्रश्न 6:
दिन जल्दी–जल्दी ढलता हैं– की आवृति से कविता की किस विशेषता का पता चलता हैं?
उत्तर –
'दिन जल्दी–जल्दी ढलता है'-की आवृत्ति से यह प्रकट होता है कि लक्ष्य की तरफ बढ़ते मनुष्य को समय बीतने का पता नहीं चलता। पथिक लक्ष्य तक पहुँचने के लिए आतुर होता है। इस पंक्ति की आवृत्ति समय के निरंतर चलायमान प्रवृत्ति को भी बताती है। समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता। अतः समय के साथ स्वयं को समायोजित करना प्राणियों के लिए आवश्यक है।

अन्य हल प्रश्न

लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1:
'आत्मपरिचय' कविता में कवि हरिवश राय बच्चन ने अपने व्यक्तित्व के किन पक्षों को उभारा है?
उत्तर –
'आत्मपरिचय' कविता में कवि हरिवंश राय बच्चन ने अपने व्यक्तित्व के निम्नलिखित पक्षों को उभारा है–

1. कवि अपने जीवन में मिली आशाओं–निराशाओं से संतुष्ट है।

2. वह (कवि) अपनी धुन में मस्त रहने वाला व्यक्ति है।
3. कवि संसार को मिथ्या समझते हुए हानि–लाभ, यश–अपयश, सुख–दुख को समान समझता है।
4. कवि संतोषी प्रवृत्ति का है। वह वाणी के माध्यम से अपना आक्रोश प्रकट करता है।

प्रश्न 2:
'आत्मपरिचय' कविता पर प्रतिपाद्य लिखिए।
उत्तर –
'आत्मपरिचय' कविता के रचयिता का मानना है कि स्वयं को जानना दुनिया को जानने से ज्यादा कठिन है। समाज से व्यक्ति का नाता खट्टा–मीठा तो होता ही है। संसार से पूरी तरह निरपेक्ष रहना संभव नहीं। दुनिया अपने व्यंग्य–बाण तथा शासन–प्रशासन से चाहे जितना कष्ट दे, पर दुनिया से कटकर मनुष्य रह भी नहीं पाता क्योंकि उसकी अपनी अस्मिता, अपनी पहचान का उत्स, उसका परिवेश ही उसकी दुनिया है। वह अपना परिचय देते हुए लगातार दुनिया से अपने द्रविधात्मक और द्वंद्वात्मक संबंधों का मर्म उद्‌घाटित करता चलता है। वह पूरी कविता का सार एक पंक्ति में कह देता है कि दुनिया से मेरा संबंध प्रीतिकलह का है, मेरा जीवन विरुद्धों का सामंजस्य है।

प्रश्न 3:
"दिन जल्दी – जल्दी ढलता है। कविता का उद्‌दर्श्य बताइए।
उत्तर –
यह गीत प्रसिद्ध कवि हरिवंश राय बच्चन की कृति निशा–निमंत्रण से उद्‌धृत है। इस गीत में कवि प्रकृति की दैनिक परिवर्तनशीलता के संदर्भ में प्राणी–वर्ग के धड़कते हृदय को सुनने की काव्यात्मक कोशिश को व्यक्त करता है। किसी प्रिय आलंबन या विषय से भावी साक्षात्कार का आश्वासन ही हमारे प्रयास के पगों की गति में चंचलता यानी तेजी भर सकता है। इससे हम शिथिलता और फिर जड़ता को प्राप्त होने से बच जाते हैं। यह गीत इस बड़े सत्य के साथ समय के गुजरते जाने के एहसास में लक्ष्य–प्राप्ति के लिए कुछ कर गुजरने का जज्बा भी लिए हुए है।

प्रश्न 4:
'आत्मपरिचय' कविता को द्वष्टि में रखते हुए कवि के कथ्य को अपने शब्दों में प्रस्तुत कीज।
उत्तर –
'आत्मपरिचय' कविता में कवि कहता है कि यद्यपि वह सांसारिक कठिनाइयों से जूझ रहा है, फिर भी वह इस जीवन से प्यार करता है। वह अपनी आशाओं और निराशाओं से संतुष्ट है। वह संसार से मिले प्रेम व स्नेह की परवाह नहीं करता, क्योंकि संसार उन्हीं लोगों की जयकार करता है जो उसकी इच्छानुसार व्यवहार करते हैं। वह अपनी धुन में रहने वाला व्यक्ति है। कवि संतोषी प्रवृत्ति का है। वह अपनी वाणी के जरिये अपना आक्रोश व्यक्त करता है। उसकी व्यथा शब्दों के माध्यम से प्रकट होती है तो संसार उसे गाना मानता है। वह संसार को अपने गीतों, द्वंद्वों के माध्यम से प्रसन्न करने का प्रयास करता है। कवि सभी को सामंजस्य बनाए रखने के लिए कहता है।

प्रश्न 5:
कौन–सा विचार दिन ढलने के बाद लौट रहे पंथी के कदमों को धीमा कर देता हैं? 'बच्चन' के गीत के आधार पर उत्तर दीजिए।

उत्तर –
कवि एकाकी जीवन व्यतीत कर रहा है। शाम के समय उसके मन में विचार उठता है कि उसके आने के इंतजार में व्याकुल होने वाला कोई नहीं है। अतः वह किसके लिए तेजी से घर जाने की कोशिश करे। शाम होते ही रात हो जाएगी और कवि की विरह–व्यथा बढ़ने से उसका हृदय बेचैन हो जाएगा। इस प्रकार के विचार आते ही दिन ढलने के बाद लौट रहे पंथी के कदम धीमे हो जाते हैं।

प्रश्न 6:
यदि संजिल दूर हो तो लोगों की वहाँ पहुँचने की मानसिकता कैसी होती हैं?
उत्तर –
मंजिल दूर होने पर लोगों में उदासीनता का भाव आ जाता है। कभी–कभी उनके मन में निराशा भी आ जाती है। मंजिल की दूरी के कारण कुछ लोग घबराकर प्रयास करना छोड़ देते हैं। कुछ व्यर्थ के तर्क–वितर्क में उलझकर रह जाते हैं। मनुष्य आशा व निराशा के बीच झूलता रहता है।

प्रश्न 7:
कवि को संसार अपूर्ण क्यों लगता है?
उत्तर –
कवि भावनाओं को प्रमुखता देता है। वह सांसारिक बंधनों को नहीं मानता। वह वर्तमान संसार को उसकी शुष्कता एवं नीरसता के कारण नापसंद करता है। वह बार–बार वह अपनी कल्पना का संसार बनाता है तथा प्रेम में बाधक बनने पर उन्हें मिटा देता है। वह प्रेम को सम्मान देने वाले संसार की रचना करना चाहता है।

प्रश्न 8:
निम्नलिखित पद्यश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

मैं स्नेह-सुरा का पान किया करता हूँ,
मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ,
जग पूछ रहा उनको, जो जग की गाते,
मैं अपने मन का गान किया करता हूँ।

मैं निज उर के उद्गार लिए फिरता हूँ
मैं निज उर के उपहार लिए फिरता हूँ
है यह अपूर्ण संसार न मुझको भाता
मैं स्वप्नों का संसार लिए फिरता हूँ।

(क) कवि ने 'स्नेह' को 'सुरा' क्यों कहा है? ससार के प्रति उसके नकारात्मक दृष्टिकोण का क्या कारण है?
(ख) ससार किनकी महत्व देता हैं? कवि को वह महत्व क्यों नहीं दिया जाता?

(ग) 'उद्गार' और 'उपहार' कवि को क्यों प्रिय हैं?
(घ) आशय स्पष्ट कीजिए :

है यह अपूर्ण संसार न मुझको भाता
मैं स्वप्नों का संसार लिए फिरता हूँ।

उत्तर –

(क) कवि ने 'स्नेह' को 'सुरा' इसलिए कहा है क्योंकि वह प्रेम की मादकता में डूब जाता है। इस मादकता के कारण उसे सांसारिक कष्टों की परवाह नहीं रह जाती।
(ख) संसार उन लोगों को महत्त्व देता है जो सांसारिकता में डूबे रहते हैं और सांसारिकता को ही सर्वोत्तम मानते हैं। कवि सांसारिकता से दूर रहता है, इसलिए संसार कवि को महत्व नहीं देता।
(ग) कवि को उद्गार इसलिए पसंद है क्योंकि इस उद्गार में उसके मन के भाव समाए हुए हैं, जिन्हें वह दुनिया को देना चाहता है। उसे उपहार इसलिए पसंद हैं, क्योंकि उसके हृदय रूपी उपहार में कोमल भाव समाए हुए हैं।
(घ) आशय–कवि को लगता है कि बाहरी संसार प्रेम के बिना अपूर्ण है। संसार में प्रेम का अभाव है, इसलिए संसार द्व नाहीं भाता। कवि के मना में प्रेम से पिरपूर्ण संसार का एक सपना है जिसे वह साकर रूप देना चाहता है।

प्रश्न 9:
निम्नलिखित काव्य–पक्तियों के काव्य–सौंदय पर प्रकाश डालिए–

मुझसे मिलने को कौन विकल?
मैं होऊँ किसके हित चचल?
यह प्रश्न शिथिल करता परा को, भरत उर में विहवलता है!
दिन जल्दी- जल्दी ढलता है!

उत्तर –

भावसौंदर्य– शाम निकट जानकर प्राणी अपने–अपने घर आने को उद्धृत हैं, क्योंकि उनके घर पर कोई–न–कोई उनकी प्रतीक्षा कर रहा होता है। पर कवि के आने के इंतजार में कोई प्रतीक्षारत नहीं है, इसलिए उसके कदम शिथिल हैं।
शिल्पसौंदर्य

- प्रश्न अलंकार का प्रयोग है।
- 'जल्दी–जल्दी' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।

- सरल, सहज, प्रवाहमयी भाषा भावाभिव्यक्ति के अनुकूल है।
- तत्सम शब्दों का प्रयोग है।

प्रश्न 10:
'दिन जल्दी–जल्दी ढलता है' कविता का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर –
'दिन जल्दी–जल्दी ढलता है' कविता प्रेम की महत्ता पर प्रकाश डालती है। प्रेम की तरंग ही मानव के जीवन में उमंग और भावना की हिलोर पैदा करती है। प्रेम के कारण ही मनुष्य को लगता है कि दिन जल्दी–जल्दी बीता जा रहा है। इससे अपने प्रियजनों से मिलने की उमंग से कदमों में तेजी आती है तथा पक्षियों के पंखों में तेजी और गति आ जाती है। यदि जीवन में प्रेम हो तो शिथिलता आ जाती है।